कम्पोस्ट खाद

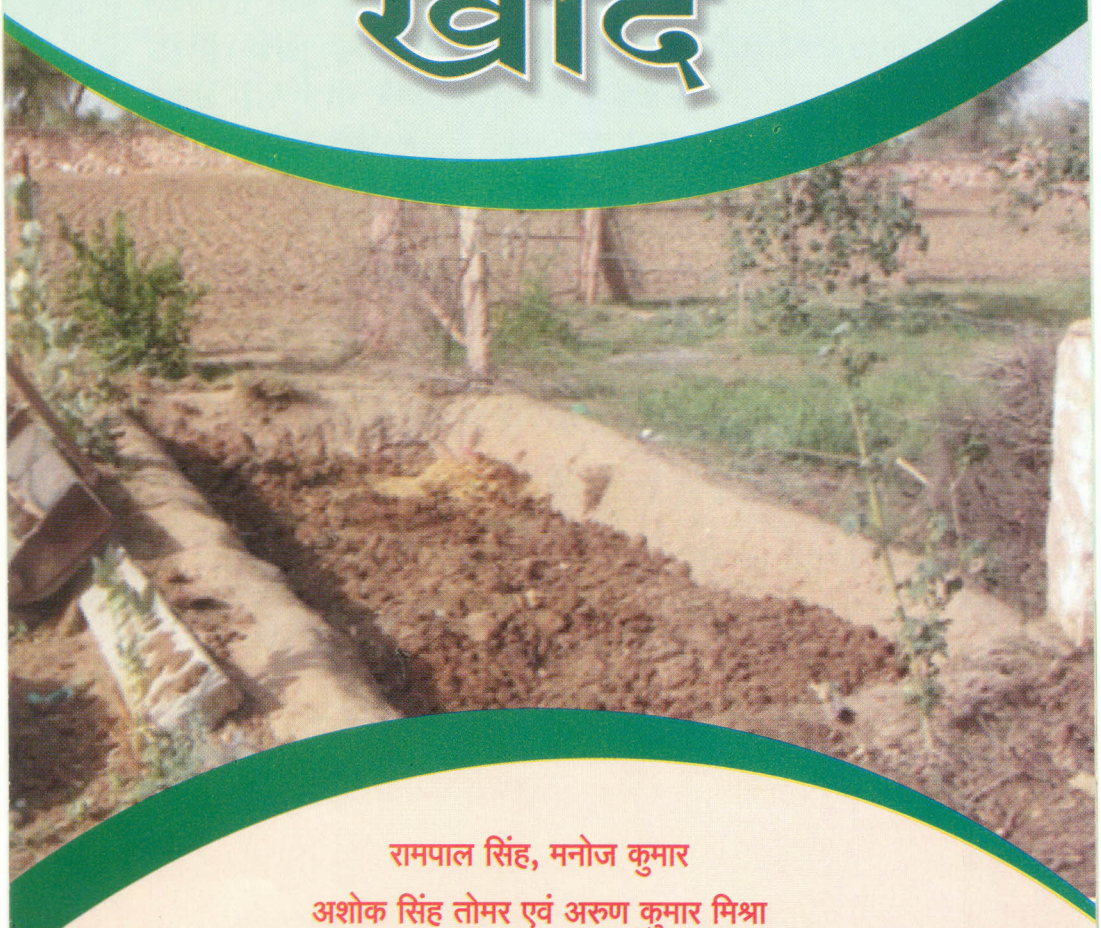

रामपाल सिंह, मनोज कुमार
अशोक सिंह तोमर एवं अरुण कुमार मिश्रा

2015

कृषि विज्ञान केन्द्र

भा.कृ.अ.प.–केन्द्रीय शुष्क क्षेत्र अनुसंधान संस्थान
आई.एस.ओ. 9001 : 2008
जोधपुर 342 003

भारत एक कृषि प्रधान देश है। यहाँ के 70 प्रतिशत लोग गावों में रहते है। कृषि और कृषि से जुड़े अन्य कार्य जैसे पशुपालन, लघु उद्योग व अन्य स्वरोजगार कार्य गावों में किये जाते हैं। गावों के किसानों की मुख्य समस्या आर्थिक कमजोरी है। आचार्य विनोबा भावे ने कहा है कि भारतीय गांवों को जीवित देखना चाहते हो तो कृषि विकास होना जरूरी है। कम्पोस्ट खाद का निर्माण करके किसान भाई अधिक लाभ कमा सकते हैं। कम्पोस्ट खाद खेतों में डालने से खेतों की उपजाऊ क्षमता बढ़ती है तथा फसलों की अधिक उपज होने से आर्थिक स्थिति मजबूत होती है, और भूमि का भी सुधार होता है।

कम्पोस्ट खाद के मुख्य लाभ

1. कम्पोस्ट खाद में दीमक नहीं लगती।
2. खरपतवार के बीजों की अकुरण शक्ति नष्ट हो जाती है।
3. फसलों के हानिकारक कीड़ों की हानि पहुँचाने की क्षमता घटती है, तथा कम्पोस्ट खाद खेत में डालने से फसलों की उपज में वृद्धि हो जाती है।
4. खेत की मिट्टी मुलायम हो जाती है तथा ढेले नहीं बनते हैं।
5. फसल को सभी पोषक तत्वों की पर्याप्त मात्रा आसानी से उपलब्ध हो जाती है।
6. मिट्टी की जल धारण क्षमता में वृद्धि होती है।
7. कम्पोस्ट खाद मिट्टी में वायु और नमी का संतुलन बनाए रखने में सहायक होती है।
8. कम्पोस्ट खाद खेत में डालने से रासायनिक उर्वरकों की कम आवश्यकता होती है।

कम्पोस्ट खाद तैयार करने के लिए आवश्यक सामग्री

गाय तथा भैंस का गोबर, भेड़–बकरी की मीगंणी एवं मूत्र तथा बाजरा, मोठ, तिल, ग्वार, मूंग, सरसों आदि फसलों के अवशेष, अवांछित घास, खरपतवार तथा पेड़ो की पत्तियां, पशुशाला का कचरा। **जीरा फसल के अवशेष तथा प्लास्टिक कम्पोस्ट के गडढ़े में न डाले क्योकि जीरे के अवशेषों मे कई प्रकार के फफूंद जनित रोग होते हैं।**

कम्पोस्ट खाद बनाने की विधि

1. कम्पोस्ट बनाने के लिए पशुओं के बाड़े के पास थोड़ी ऊँचाई वाले स्थान पर 10 फीट लम्बा, 5 फीट चौड़ा 3 फीट गहरा गड्ढा बनाएं। यह गड्ढा छः छोटे–बड़े पशु रखने वाले किसानों के लिए प्र्याप्त होता है।
2. कच्चा गड्ढा हो तब अदरूनी भाग में घोल पतले गोबर एवं मिट्टी के मिश्रण का एक इंच मोटाई का लेप करें।
3. गोबर एवं भेड़–बकरी की मींगणी तथा उपलब्ध पशुशाला का कचरा, फसल अवशेष अलग–अलग गड्ढे के पास इकटठा करे।
4. सर्वप्रथम फसल अवशेष तथा पशुशाला का कचरा गड्ढे में आधा फीट की तह तक दबाकर भरें।
5. उपरोक्त तह पर आधा फिट ऊँचाई तक गोबर डालें।
6. गोबर की सतह पर 10–15 बाल्टी पानी छिड़के।
7. गोबर की सतह पर फसल अवशेष, पशुशाला का कचरा, पेड़ों की पत्तियां, घास फूस आधा फीट ऊंचाई तक दबाकर डालें।
8. इसी तरह कचरे की सतह पर आधा फीट गोबर की सतह बना दें।

9. गढ्ढा जमीन के लेवल से एक फिट ऊँचाई तक भरें।

10. गढ्ढा पूरा भरने के बाद गढ्ढे के ऊपर चारों कोनों में तथा बीच में एक एक छोटा गढ्ढा बनाकर 10–10 बाल्टी पानी डाल दें।

11. एक सप्ताह बाद गोबर के गड्ढे का लेवल जमीन के लेवल तक आ जाता है। अब गढ्ढे के ऊपर एक फीट ऊंचाई तक खेत की मिट्टी डालकर उसे ढक देते है ताकि गड्ढे में नमी व तापक्रम बना रहे तथा गोबर के सड़ने से उत्पन्न गैसें बाहर न आये।

12. गड्ढे को मिट्टी से ढकने के चार महीने बाद कम्पोस्ट खाद तैयार हो जाती है।

13. कम्पोस्ट खाद को जब खेत में डालना हो तो गढ्ढे से निकाल कर खेत में फैला दें और तुरन्त कल्टीवेटर या हैरो की मदद से जुताई करके मिट्टी में मिला दें।

14. कम्पोस्ट खाद 30 टन प्रति हैक्टेयर के हिसाब से खेतो में प्रयोग करें। फलदार वृक्षों में 15 किलोग्राम खाद प्रति वृक्ष दें।

अधिक जानकारी हेतु कृषि विज्ञान केन्द्र, काजरी, जोधपुर से सम्पर्क करें।

प्रकाशक : निदेशक, भा.कृ.अ.प.–केन्द्रीय शुष्क क्षेत्र अनुसंधान संस्थान, जोधपुर 342 003

सम्पर्क सूत्र : दूरभाष +91–291–2786584 (कार्यालय)
+91–291–2788484 (निवास), फैक्सः +91–291–2788706
ई–मेल : director.cazri@icar.gov.in
वेबसाईट : http://www.cazri.res.in

सम्पादन समिति : सुभाष कुमार जिन्दल, निशा पटेल, धर्म वीर सिंह, नवरतन पंवार
प्रियब्रत सांतरा, प्रणव कुमार रॉय, राकेश पाठक व श्री बल्लभ शर्मा

काजरी किसान हेल्प लाईन : 0291–2786812

Evergreen 9411128647